भारत के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति का अध्ययन

डॉ0 अर्चना श्रीवास्तवा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा शास्त्र विभाग,
टी0डी0पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर
Email. – *archanasrivastava2742@gmail.com*

सारांश :–

प्रस्तुत शोध–पत्र में स्वतन्त्रता के बाद भारत के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन स्वतन्त्रता के बाद उत्तर प्रदेश में पाँच दशकों (1951–2001) में स्त्री शिक्षा के विकास के अध्ययन तक सीमित है। प्रत्येक प्रगतिशील राष्ट्र अपने सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार करता है। भारत ने नारी के उत्थान और विकास के लिए शिक्षा की पूर्व निश्चित प्रतिज्ञा और भारत को जनतान्त्रिक एवं समानतावादी समाज बनाने के उद्देश्य को स्वीकार किया है। स्वतन्त्रता के बाद भारत में नारी एवं नारी शिक्षा के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के आयोगों और समितियों का गठन किया गया तथा योजनाएँ बनायी गयी विभिन्न प्रयासों के परिणामस्वरूप स्त्री शिक्षा की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। भारत के सन्दर्भ में जब हम उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति पर दृष्टि डालते हैं तो पता चलता है कि स्वतन्त्रता के बाद उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ। सन् 1951 में स्त्री साक्षरता दर 4.07 प्रतिशत थी जो सन् 2001 तक उत्तरोत्तर वृद्धि कर 42.98 प्रतिशत पहुँच गयी। लेकिन उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक नही है; स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन के बावजूद भी आज उत्तर प्रदेश की लगभग आधी महिलाओं की जनसंख्या अशिक्षा के अन्धकार में डूबी हुयी है। स्त्री शिक्षा के विकास हेतु किये गये विभिन्न सार्थक प्रयासों के बाद भी स्त्री शिक्षा आज भी उत्तर प्रदेश में बहुत पिछड़ी अवस्था में है जिसका मुख्य कारण है स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली समस्यायें। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली समस्याओं को दृढ़ संकल्प के साथ दूर किया जाय तथा इस क्षेत्र में किये जाने वाले प्रयासों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाय। यदि उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा का वांछित विकास करना है तो सभी को सरकार, जनता, सभी संस्थाओं एवं स्वंय महिलाओं को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा और अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्णनिष्ठा एवं उत्साह के साथ करना होगा।

प्रस्तावना :–

प्रत्येक प्रगतिशील राष्ट्र अपने सर्वांगीण विकास के लिए विशिष्ट नियमों तथा नीतियों का अनुसरण करता है। राष्ट्र निर्माण में शिक्षा एक शानदार भूमिका अदा करेगी, ऐसा भारतीयों का संकल्पबोध है। वातावरण में सन्तुलन बनाये रखने के लिए शिक्षा एक कुंजी है और एक

जनतान्त्रिक और शान्त समाज के निर्माण में सहायक होती है जहाँ स्त्री और पुरूष समान भूमिका अदा करते हैं।

भारत ने नारी के उत्थान और विकास के लिए शिक्षा की पूर्व निश्चित प्रतिज्ञा और भारत को जनतान्त्रिक समाज एवं समानतावादी समाज बनाने के उद्देश्य को स्वीकार किया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् राधाकृष्णन आयोग ने नारी शिक्षा, महिला के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बिना शिक्षित महिला के कोई व्यक्ति शिक्षित नही हो सकता, यदि सामान्य शिक्षा को स्त्री–पुरूष तक सीमित करना है तो यह अवसर महिलाओं को मिलना चाहिए। भारत के समाज सुधारकों के द्वारा 19वीं शताब्दी से नारी के उत्थान के लिए आवाज उठायी गयी।

स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा की समानता को अनिवार्य घोषित करने में और उसे व्यावहारिक रूप देने में काफी अन्तर था। पुरूषों की शिक्षा, रोजगार से जुड़ी हुयी थी जबकि लड़कियों की शिक्षा का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था। प्रथम पंचवर्षीय योजना में नारी के उत्थान और विकास पर बल दिया गया। सन् 1970 ई0 में यह महसूस किया गया कि नारी शिक्षा सिर्फ उनके परिवार तक ही सीमित नही होना चाहिए बल्कि उनकी भूमिका समाज के सभी क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। नारी की स्थिति पर गठित समिति की रिपोर्ट ने महिलाओं की कार्य में सहभागिता की कमी एवं एक घटता हुआ लैंगिक अनुपात और नयी तकनीकी में महिलाओं का विस्थापन, अस्वस्थता और निम्न शैक्षिक स्तर को प्रकाशित किया। छठीं पंचवर्षीय योजना में पहली बार 'नारी और विकास' नामक एक अलग शीर्षक को प्रकाशित किया गया तथा नारी शिक्षा की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आयोजित किया गया जिसमें स्त्री शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् नारी एवं नारी शिक्षा के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के आयोगों, समितियों का गठन किया गया तथा योजनाएँ बनायी गयी। स्वतन्त्र भारत में स्त्री शिक्षा की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। विभिन्न सार्थक प्रयासों के परिणामस्वरूप स्त्री शिक्षा में तेजी से वृद्धि हुई।

किसी भी देश की साक्षरता उसके सामाजिक एवं आर्थिक विकास का एक सूचक है। यह विकासात्मक तकनीकी के प्रसार के ऊपर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। यदि हम भारतवर्ष के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश की स्त्री शिक्षा का विकास देखें तो पता चलता है कि अन्य प्रदेशों की अपेक्षा उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है। सन् 2001 की जनगणना रिपोर्ट से यह पता चलता है कि उत्तर प्रदेश की कुल साक्षरता दर 57.36 प्रतिशत थी, पुरूषों की साक्षरता दर 70.23 प्रतिशत एवं महिलाओं की साक्षरता दर 42.98 प्रतिशत थी। उत्तर प्रदेश की कुल साक्षरता दर राष्ट्रीय साक्षरता दर 65.38 प्रतिशत से कम है और महिला साक्षरता दर भी राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर 54.16 प्रतिशत से बहुत कम है जो निराशाजनक है।

उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति :–

उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की आबादी 16,60,52,859 थी। उत्तर प्रदेश में उत्तरांचल के अलग होने के बाद 70 जिले तथा 17 मण्डल थे। यदि लिंगीय अनुपात को देखें तो जहाँ प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या सन् 1991 में 876 थी वहीं 2001 में

898 हो गयी थी। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की कुल साक्षरता दर 57. 36 प्रतिशत थी, पुरूषों की साक्षरता दर 70.23 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 42.98 थी। इस जनगणना रिपोर्ट से यह पता चलता है कि भारत के कुल प्रान्तों में सबसे अधिक साक्षरता दर केरल (90.92 प्रतिशत) की थी और सबसे कम बिहार (47.53 प्रतिशत) बिहार की थी। भारत के सन्दर्भ में जब हम उत्तर प्रदेश में साक्षरता दर देखते हैं तो पता चलता है कि उत्तर प्रदेश 31वें स्थान पर था तथा अन्य प्रान्तों से बहुत पीछे है। अरूणाचल प्रदेश (54.74 प्रतिशत), जम्मू कश्मीर (54.46 प्रतिशत), झारखण्ड (54.13 प्रतिशत) और बिहार (47.53 प्रतिशत) को छोड़कर अन्य सभी प्रदेशों से उत्तर प्रदेश की शिक्षा का स्तर निम्न है।

प्रत्येक प्रगतिशील राष्ट्र अपने सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार करता है। भारत ने नारी के उत्थान और विकास के लिए शिक्षा की पूर्व निश्चित प्रतिज्ञा और भारत को जनतान्त्रिक एवं समानतावादी समाज बनाने के उद्देश्य को स्वीकार किया है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् राधाकृष्णन आयोग ने नारी शिक्षा, महिला के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बिना शिक्षित महिला के कोई व्यक्ति शिक्षित नही हो सकता, यदि सामान्य शिक्षा को स्त्री–पुरूष तक सीमित करना है तो यह अवसर महिलाओं को मिलना चाहिए।

उत्तर प्रदेश में सन् 2001 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार स्त्रियों की साक्षरता दर 42.98 प्रतिशत थी जो सबसे उच्चतम महिला साक्षरता दर 87.86 प्रतिशत जो कि केरल की है से 44.88 प्रतिशत कम है। भारत में सबसे कम महिला साक्षरता दर 33.57 प्रतिशत बिहार की है जो उत्तर प्रदेश की महिला साक्षरता दर से सिर्फ 09.41 प्रतिशत कम है। अतः भारत के तीन राज्यों (जम्मू कश्मीर, झारखण्ड, बिहार) को छोड़कर उत्तर प्रदेश स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी साक्षरता सीढ़ी पर बहुत नीचे है। भारत में उत्तर प्रदेश महिला साक्षरता दर के अनुसार 32वें स्थान पर थी।

यद्यपि उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा की स्थिति अन्य प्रदेशो की अपेक्षा दयनीय है फिर भी स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से वृद्धि हुयी है। सन् 1991–2001 के दशक में स्त्री शिक्षा के स्तर में काफी तेजी से वृद्धि हुयी है। जहाँ सन् 1991 में महिला साक्षरता दर 24.37 प्रतिशत थी वहीं यह दर बढ़कर 42.98 प्रतिशत हो गयी। स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में शैक्षिक विकास तीव्र गति से हुआ जहाँ तक स्त्री शिक्षा का प्रश्न है उत्तर प्रदेश में आज भी स्त्री शिक्षा की स्थिति अन्य प्रदेशों की अपेक्षा बहुत दयनीय है। किन्तु 1951 के बाद उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा के स्तर में काफी तेजी से परिवर्तन हुआ। सन् 1951 में महिला साक्षरता दर 4.07 प्रतिशत थी, जो 2001 में उत्तरोत्तर वृद्धि के परिणामस्वरूप बढ़कर 42.98 प्रतिशत हो गयी। सन् 1991 और 2001 की जनगणना रिपोर्ट में 7 वर्ष से कम के बच्चे अशिक्षित माने गये जबकि सन् 1981 और उसके पूर्व 5 वर्ष से कम बच्चों को अशिक्षित की श्रेणी में रखा गया था। इसी आधार पर उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर की तुलनात्मक अध्ययन की तालिका आगे दी जा रही है।

तालिका नं0 – 1

साक्षरता दर 1951–2001 उत्तर प्रदेश

वर्ष	कुल साक्षरता	पुरूष	महिला
1951	12.0199719	19.16798458	4.073312004
1961	20.87375426	32.08375688	8.364964365
1971	23.99010618	35.01017953	11.23066459
1981	32.64710258	46.65423278	16.74215631
1991	40.71182357	54.82489537	24.36601105
2001	57.36082487	70.22698833	42.97850169

स्रोत :– उत्तर प्रदेश सरकार की नोडल वेब साइड 2001

उपर्युक्त तालिका के अवलोकनार्थ यह पता चलता है कि महिला व पुरूष का शैक्षिक स्तर उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। सन् 1951 में पुरूषों की साक्षरता दर 19.17 प्रतिशत और महिलाओं की 4.07 प्रतिशत थी। पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की साक्षरता दर में 15.01 प्रतिशत का अन्तर था। सन् 1961 में पुरूषों के शैक्षिक स्तर में 12.91 प्रतिशत की वृद्धि हुयी और महिलाओं के शैक्षिक स्तर में 4.29 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। सन् 1971 में यह वृद्धि (पुरूषों) में 2. 99 प्रतिशत एवं (महिलाओं) में 2.87 प्रतिशत हुयी। जबकि सन् 1981 में पुरूषों की साक्षरता दर में 11.64 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता दर में 5.51 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। सन् 1991–2001 के दशक में सबसे तेजी से स्त्रियों और पुरूषों की शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुयी। पुरूषों के शैक्षिक दर में 1991 की अपेक्षा 2001 में 15.41 प्रतिशत तथा स्त्रियों के साक्षरता दर में 18.61 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। सन् 1951 से 2001 के बीच पुरूषों और महिलाओं दोनों के शैक्षिक स्तर का विकास हुआ लेकिन यह विकास पुरूषों के पक्ष में था। उत्तर प्रदेश में महिलाओं की साक्षरता दर में उत्तरोत्तर वृद्धि तो हुयी लेकिन वह सन्तोषजनक नही है, पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का शैक्षिक स्तर निम्न है।

निःसन्देह भारत में स्त्रियों की शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। आज 21वीं शताब्दी में नारी शिक्षा की प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी है। उत्तर प्रदेश में भी स्त्रियों के शिक्षा की स्थिति में तीव्र गति से वृद्धि हुयी लेकिन यह वृद्धि सन्तोषजनक नही है। सभी आयोगों एवं समितियों ने स्त्री शिक्षा के विकास के लिए बहुत सी संस्तुतियाँ दी। सम्भवतः वे संस्तुतियाँ अधिकतर कागज के पृष्ठों पर ही अंकित रह गयी। उनका पालन न तो राष्ट्रीय स्तर पर हुआ और न ही उत्तर प्रदेश सरकार ने इस पर ध्यान दिया अन्यथा लड़कियों की शिक्षा की यह असन्तोषजनक स्थिति पैदा नहीं होती। स्त्री शिक्षा के मार्ग में बहुत सी समस्यायें उत्पन्न हुयी और स्त्री शिक्षा का विकास अवरूद्ध हुआ। उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधायें हैं –

धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियां, शैक्षिक अवसरों की असमानता, लड़कियों की शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का अभाव, आर्थिक कठिनाईयाँ, अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या

दोषपूर्ण पाठ्यक्रम की समस्या, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा का अभाव, सरकार की उपेक्षा, दोषपूर्ण प्रशासन इत्यादि।

21वीं सदी में आवश्यकता इस बात की है कि केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारें स्त्री शिक्षा के प्रति उचित नीतियों का निर्धारण करें तथा इनकी शिक्षा के विकास के लिए ठोस कदम उठायें। लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करें और अपने उत्तरदायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाह करें। उत्तर प्रदेश में यद्यपि कि पढ़ा–लिखा अभिभावक अपनी लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूक है। लेकिन आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में पिछड़े क्षेत्रों में तथा कुछ विशेष जातियों में स्त्री शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच नही है। ऐसी स्थिति में स्त्री शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास करना एवं जागरूकता लाना बहुत जरूरी है। स्त्री शिक्षा के विकास के लिए आर्थिक कठिनाईयों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि धनाभाव में योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से नही हो पाता है। उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए यथा सम्भव सार्थक प्रयास किये जाये जिसकी अभी अत्यन्त आवश्यकता है।

निष्कर्ष :–

निःसन्देह स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में स्त्री शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ, स्त्री शिक्षा को नई दिशा और दशा प्राप्त हुयी। भारत के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश में भी स्त्री शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ। सन् 1951 में उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता दर 4.07 प्रतिशत थी वहीं सन् 2001 तक उत्तरोत्तर वृद्धि कर 42.98 प्रतिशत पहुँच गयी। वास्तव में स्त्रियों की स्थिति में जो परिवर्तन हुआ उसका प्रमुख श्रेय स्त्री शिक्षा के प्रसार एवं प्रचार को है। स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन के बावजूद भी वस्तु स्थिति यह शहादत पेश करती है कि स्त्रियों की शिक्षा उत्तर प्रदेश में दबे पाँव आगे बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश की लगभग आधी स्त्रियों की जनसंख्या आज भी अशिक्षा के अन्धकार में डूबी हुयी है। स्त्री शिक्षा के विकास हेतु किये गये इतने प्रयासों के बाद भी स्त्री शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। यदि उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा का वांछित विकास करना है तो सभी को सरकार, जनता सभी संस्थाओं एवं स्वंय महिलाओं को एक साथ मिलकर आन्दोलन चलाना होगा। यह उत्तरदायित्व किसी एक का नहीं है और नही किसी एक के प्रयासों से इस लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

1. अग्रवाल, जे0सी0 : स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास, आर्य बुक डिपो, दिल्ली 1982।
2. अग्रवाल, एस0पी0 : वुमेन्स एजुकेशन इन इण्डिया, हिस्ट्रोरिकल रिव्यू प्रेजेन्ट पर्सपेक्टीव प्लान विथ स्टैटिस्टिकल इण्डिकेटर्स, कानसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, न्यू दिल्ली 1992, रिप्रिन्टेड 1994।
3. उत्तर प्रदेश सरकार की नोडल वेबसाइड – 2001 इन्टरनेट।
4. गुप्ता, एस0पी0 : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1996।
5. सेन्सस ऑफ इण्डिया 1981 पार्ट सेकेण्ड बी, सीरिज–1 इण्डिया प्राइमरी सेन्सस अब्सट्रेक्ट जनरल पापुलेशन, ऑफिस ऑफ रजिस्ट्रार जनरल इण्डिया।
6. सेन्सस ऑफ इण्डिया 1991 और सेन्सस रिपोर्ट 1991 : उत्तर प्रदेश, आफिस ऑफ दि रजिस्ट्रार जनरल, इण्डिया।